संज्ञा की परिभाषा.

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है नाम। किसी व्यक्ति , गुणए प्राणीए व् जातिए स्थान , वस्तुए क्रिया और भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं।

संज्ञा के उदाहरण

रमेश परीक्षा में प्रथम आया था। इसलिए वह दौड़ता हुआ स्कूल से घर पहुंचाए इस बात से वह बहुत खुश था। उसने यह बात अपने माता . पिता को बताई। यह समाचार सुन वह इतने आनंदित हुए कि उन्होंने उसे गले लगा लिया।

यहाँ पर खुश और आनंदित भाव .ए रमेश, माता.पिता यक्ति .ए स्कूलएघर स्थान .ए सुनए गले क्रिया . आदि संज्ञा आई हैं।

संज्ञा के भेद

1. जातिवाचक संज्ञा
2. भाववाचक संज्ञा
3. व्यक्तिवाचक संज्ञा
4 समूहवाचक संज्ञा
5. द्रव्यवाचक संज्ञा

1. जातिवाचक संज्ञा क्या होती है .. जिस शब्द सेएकही जाति के अनेक प्राणियों , वस्तुओं का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं अथार्त जिस शब्द से किसी जाति का सम्पूर्ण बोध होता हो यह उसकी पूरी श्रेणी और पूर्ण वर्ग का ज्ञान होता है उस संज्ञा शब्द को जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण- मोटर साइकिल, कार, टीवी, पहाड़, तालाब, गाँव, लड़का, लड़की , घोड़ा, शेर।

2. भाववाचक संज्ञा- जिस संज्ञा शब्द से किसी के गुण , दोष, दशा, स्वभाव, भाव आदि का बोध हो उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं। अथार्त जिस शब्द से किसी वस्तु , पदार्थ या प्राणी की दशा , दोष भाव, आदि का पता चलता हो वहाँ पर भाववाचक संज्ञा होती है।

सर्वनाम

सर्वनाम की परिभाषा-

सर्वनाम का अर्थ होता है सब का नाम। जो शब्द संज्ञा की जगह प्रयुक्त होते हैं उसे सर्वनाम कहते हैं। भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए जो शब्द संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किए जाते हैं उसे सर्वनाम कहते हैं।

संज्ञा की पुनरुक्ति को दूर करने के लिए ही सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है। हिंदी में कु ल 11 मूल सर्वनाम होते हैं- मैं, तू, यह, वह, आप, जो, सो, कौन, क्या, कोई, कुछ आदि।

सर्वनाम के उदाहरण.

1. सीता ने गीता से कहा, मैं तुम्हे पुस्तक दूंगी।
2. सीता ने गीता से कहा, मैं बाजार जाती हूँ।
3. सोहन एक अच्छा विद्यार्थी है वह रोज स्कूल जाता है।
4. राम, मोहन के साथ उसके घर गया।

यहाँ पर मैं, वह और उसके संज्ञा के स्थान पर सर्वनाम प्रयुक्त हुए हैं।

सर्वनाम के भेद..

1. पुरुषवाचक सर्वनाम

2. निजवाचक सर्वनाम

3. निश्चयवाचक सर्वनाम

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम

5. संबंधवाचक सर्वनाम

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम

1. पुरुषवाचक सर्वनाम - जिन शब्दों से व्यक्ति का बोध होता है उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसका प्रयोग व्यक्तिवाचक संज्ञा की जगह पर किया जाता है। इसका प्रयोग स्त्री और पुरुष दोनों के लिए किया जाता है। जिस सर्वनाम का प्रयोग सुननेवाले यानि श्रोता, कहने वाले यानि वक्ता और किसी और व्यक्ति के लिए होता है उसे पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे.. मैं, तू, वह, हम, वे, आप, उसे, उन्हें, ये, यह आदि।

पुरुषवाचक सर्वनाम के भेद..

1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम

2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम

3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम

1. उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों का प्रयोग कहने वाला खुद को प्रकट करने के लिए करता है उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं अथार्त जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला खुद के लिए करता है उसे उत्तम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- मैं, हम, हमारा, मुझे, मुझको, हमको, मेरा, हमें आदि।

2. मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों को सुनने वाले के लिए प्रयोग किया जाता है उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं अर्थात जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला यानि वक्ता , सुनने वाले यानि की श्रोता के लिए प्रयोग करता है उसे मध्यम पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे.. तुम, आप, तू, तुझे, तुम्हारा, आप, आपको, तेरा, तुम्हे, आपका, आप लोग, तुमसे, तुमने आदि।

3. अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम.. जो व्यक्ति उपस्थित नही होता है वह वक्ता और श्रोता के लिए अन्य व्यक्ति होता है। जिन शब्दों का प्रयोग अन्य व्यक्तियों के लिए किया जाये वे स भी अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम होते हैं। अथार्त जिन शब्दों का प्रयोग बोलने वाला , सुनने वाले के अलावा जिसके लिए करता है उसे अन्य पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे.. वह, वे, उसने, यह, ये, इसने, वो, उसका, उनका, उन्हें, उसे आदि।

पुरुष वाचक सर्वनाम कारकरूप में..

कारक एकवचन बहुवचन

1. कर्ता - मैं, मैंने, तू, तूने, वह, उसने त्र हम, हमने, तुम, तुमने, वे, उन्होंने आदि।

2. कर्म - मुझे, मुझको, तुझे, तुझको, उसे, उसको त्र हमें, हमको, तुम्हें, तुमको, उन्हें, उनको आदि।

3. करण - मुझसे, मेरे द्वारा, तुझसे, तेरे द्वारा, उससे, उसके द्वारा त्र हमसे , हमारे द्वारा, तुमसे, तुम्हारे द्वारा, उनसे, उनके द्वारा आदि।

4. सम्प्रदान - मेरे लिए, मुझे, मुझको, तेरे लिए, तुझे, तुझको, उसके लिए, उसे उसको त्र हमारे लिए , हमें, हमको, तुम्हारे लिए, तुम्हे, तुमको, उनके लिए, उन्हें, उनको आदि।

5. अपादान - मुझसे, तुझसे, उससे त्र हमसे, तुमसे, उनसे आदि।

6. संबंध - मेरा, मेरी, मेरे, तेरा, तेरी, तेरे, उसका, उसकी, उसके त्र हमारा , हमारी, हमारे, तुम्हारा, तुम्हारी, तुम्हारे, उनका, उनकी, उनके आदि।

7. अधिकरण - मुझमें, मुझ पर, तुझमें, तुझ पर, उसमें, उस पर , हममें, हम पर, तुममें, तुम पर, उनमें, उन पर आदि।

2. निजवाचक सर्वनाम - निज शब्द का अर्थ होता है अपना और वाचक का अर्थ होता है बोध। अपनेपन का बोध करने वाले शब्दों को निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। अथार्त जिन सर्वनामों का प्रयोग कर्ता के साथ अपने पन का बोध करने के लिए किया जा ता है उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जहाँ पर वक्ता अपने या अपने आप शब्द का प्रयोग करता है वहाँ पर निजवाचक सर्वनाम होता है।

जैसे- हमें, तुम, अपने, आप, अपने आप, निजी, खुद, स्वंय आदि।

निजवाचक सर्वनाम आप का प्रयोग

क. आप को संज्ञा या सर्वनाम के निश्चय के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैसे- मैं आप वहीं से आया हूँ।

ख. आप को दूसरे व्यक्तियों के निराकरण के लिए किया जाता है।

जैसे- उन्होंने मुझे रहने के लिए कहा था और आप चलते बने।

ग. आप को सर्वसाधारण के अर्थ के लिए प्रयोग किया जाता है।

जैसे- अपने से बड़ों का आदर करना उचित होता है।

घ. आप का प्रयोग अवधारण में कभी कभी ही जोडकर किया जाता है।

जैसे- मैं यह कार्य आप ही कर लूँगा।

3. निश्चयवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु अथवा घटना की ओर निश्चयात्मकरूप से संकेत करे उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। इसे सं केतवाचक सर्वनाम भी कहते हैं। इसमें यह , वह, वे, ये आदि का निश्चयरूप से बोध कराते हैं।

जैसे- वह मेरा गाँव है। यह मेरी पुस्तक है। ये सेब हैं। ये पुस्तक रानी की है।

इसमें वह, यह, ये आदि शब्द निश्चित वस्तु की और संकेत कर रहे हैं।

4. अनिश्चयवाचक सर्वनाम- जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु आदि का निश्चयपूर्वक बोध न हो वहाँ पर अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- कोई, कुछ, किसी, कौन, किसने, किन्ही को, किन्ही ने, जौन, तौन, जहाँ, वहाँ आदि।

5. संबंध वाचक सर्वनाम- जिन शब्दों से परस्पर संबंध का पता चले उसे संबंधवाचक सर्वनाम कहते हैं। जिन शब्दों से दो पदों के बीच के संबंध का पता चले उसे संबंध वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जिन शब्दों से किसी व्यक्ति, वस्तु का अहसास तो होता है लेकिन उसके निश्चितरूप पता नहीं चलता उसे अनिश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे- जैसी,वैसी, जैसा, जो, जिसकी, सो, जिसने, तैसी, जहाँ, वहाँ, जिसकी, उसकी, जितना, उतना आदि।

6. प्रश्नवाचक सर्वनाम- जिन सर्वनाम शब्दों को प्रश्न पूछने के लिए प्रयोग किया जाता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। अथार्त जिन शब्दों से प्रश्न का बोध होता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

विशेषण की परिभाषा, भेद और उदाहरण

विशेषण किसे कहते हैं ?

जो शब्द संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताते हैं उसे विशेषण कहते हैं। अथार्त जो शब्द गुण , दोष, भाव, संख्या, परिणाम आदि से संबंधित विशेषता का बोध कराते हैं उसे विशेषण कहते हैं। विशेषण को सार्थक शब्दों के आठ भेदों में से एक माना जाता है। यह विकारी शब्द होता है। जो शब्द विशेषता

बताते हैं उन्हें विशेषण कहते हैं। जब विशेषण रहित संज्ञा में जिस वस्तु का बोध होता है विशेषण लगने के बाद उसका अर्थ सीमित हो जाता है।

जैसे.. बड़ा, काला, लम्बा, दयालु, भारी, सुंदर, कायर, टेढ़ा-मेढ़ा,एक, दो, वीर पुरुष, गोरा, अच्छा, बुरा, मीठा, खट्टा आदि।

विशेषण के उदाहरण..

- आसमान का रंग नीला है।
- मोहन एक अच्छा लड़का है।
- टोकरी में मीठे संतरे हैं।
- रीता सुंदर है।
- कौआ काला होता है।
- यह लड़का बहुत बुद्धिमान है।
- कुछ दूध ले आओ।
- पांच किलो दूध मोहन को दे दो।
- यह रास्ता लम्बा है।
- खीरा कडवा है।
- यह भूरी गाय है।
- सुनीता सुंदर लडकी है।

विशेष्य किसे कहते हैं - जिसकी विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं अथार्त जिस संज्ञा और सर्वनाम की विशेषता बताई जाती है उसे विशेष्य कहते हैं। विशेष्य को विशेषण के पहले या बाद में भी लिखा जा सकता है।

जैसे.. विद्वान् अध्यापक, सुंदर गीता, थोड़ा सा जल लाओ, खीरा कड़वा है, सेब मीठा, आसमान नीला है, मोहन अच्छा लड़का है, सुंदर फूल,काला घोड़ा, उजली गाय मैदान में खड़ी है आदि।

प्रविशेषण किसे कहते हैं- जिन शब्दों से विशेषण की विशेषता का पता चलता है उन्हें प्रविशेषण कहते हैं।

जैसे- यह आम बहुत मीठा है, यह लडकी बहुत अच्छी है, मोहित बहुत चालाक है।

उद्देश्य विशेषण किसे कहते हैं.. विशेष्य से पहले जो विशेषण लगते हैं उन्हें उद्देश्य विशेषण कहते हैं।

जैसे- सुंदर लड़की, अच्छा लड़का, काला घोड़ा आदि।

विधेय विशेषण किसे कहते हैं.. जो विशेष्य संज्ञा और सर्वनाम आदि के बाद प्रयुक्त होते हैं उसे विधेय विशेषण कहते हैं।

जैसे.. ये सेब मीठे हैं, वह लड़की सुंदर है आदि।

विशेषण के भेद..

क. गुणवाचक विशेषण

ख. परिणामवाचक विशेषण

ग. संख्यावाचक विशेषण

घ. सार्वनामिक विशेषण

क. गुणवाचक विशेषण- जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के गुण के रूप की विशेषता बताते हैं उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

गुणवाचक विशेषण के कुछ के उदाहरण इस प्रकार हैं..

रूप और गुण के उदाहरण इस प्रकार हैं..

सुंदर, बलवान, विद्वान्, भला, उचित, अच्छा, ईमानदार, सरल, विनम्र, बुद्धिमानी, सच्चा, दानी, न्यायी, सीधा, शान्त आदि।

ख. परिमाणवाचक विशेषण- परिमाण का अर्थ होता है मात्रा। जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की मात्रा या नाप तोल के परिणाम की विशेषता बताएँ उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- चार किलो दूध, थोड़ा रुपया,एक किलो घी, कम लोग, थोड़ा आटा, चार किलो चावल, कम तेल, सेर भर दूध, तोला भर सोना, कुछ पानी, सब धन, मुझे थोड़ी चाय दीजिए आदि।

ग. संख्यावाचक विशेषण- संख्या की विशेषता का बोध कराने वाले शब्दों को संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। अथार्त जिन सं ज्ञा और सर्वनाम शब्दों से प्राणी , व्यक्ति, वस्तु की संख्या की विशेषता का पता चले उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे- एक,दो, द्वितीय, दुगुना, चौगुना, पाँचों, दस,अनेक, कई, चार, कुछ, सात, पाँच, तीन, बीस, तीसरा, तृतीय आदि।

घ. सार्वनामिक विशेषण- जो सर्वनाम संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता की ओर संकेत करते हैं उन्हें सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं अर्थात जो सर्वनाम संज्ञा से पहले लगकर संज्ञा की विशेषता की तरफ संकेत करें उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। इन्हें निर्देशक भी कहते हैं।

जैसे- मेरी पुस्तक, कोई बालक, किसी का महल, वह लड़का, वह बालक, वह पुस्तक, वह आदमी, वह लडकी आदि।

कारक की परिभाषा भेद और उदाहरण

कारक किसे कहते हैं-

वाक्य में प्रयुक्त संज्ञा या सर्वनाम शब्दों के साथ क्रिया का सम्बन्ध कारक कहलाता है।

कारक के विभिन्न चिह्न

कारक	चिह्न	अर्थ
कर्ता	ने	काम करने वाला
कर्म	को	जिस पर काम का प्रभाव पड़े
करण	से, द्वारा	जिसके द्वारा कर्ता काम करें
सम्प्रदान	को,के लिए	जिसके लिए क्रिया की जाए
अपादान	से (अलग होना)	जिससे अलगाव हो
सम्बन्ध	का, की, के; ना, नी, ने; रा, री, रे	अन्य पदों से सम्बन्ध
अधिकरण	में,पर	क्रिया का आधार
संबोधन	हे! अरे! अजी!	किसी को पुकारना, बुलाना

समास

समास की परिभाषा भेद एवं उदाहरण.

समास का शाब्दिक अर्थ है- 'संक्षेप'। समास प्रक्रिया में शब्दों का संक्षिप्तीकरण किया जाता है। । इसका शाब्दिक अर्थ होता है छोटारूप। अथार्त जब दो या दो से अधिक शब्दों से मिलकर जो नया और छोटा शब्द बनता है उस शब्द को समास कहते हैं। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो जहाँ पर कम से कम शब्दों में अधिक से अधिक अर्थ को प्रकट किया जाए वह समास कहलाता है।

संस्कृत, जर्मन तथा बहुत सी भारतीय भाषाओँ में समास का बहुत प्रयोग किया जाता है। समास रचना में दो पद होते हैं, पहले पद को ष्पूर्वपद कहा जाता है और दूसरे पद को उत्तर- पद कहा जाता है। इन दोनों से जो नया शब्द बनता है वो समस्त पद कहलाता है।

जैसे..

रसोई के लिए घर-रसोईघर

हाथ के लिए कड़ी- हथकड़ी

नील और कमल- नीलकमल

राजा का पुत्र- राजपुत्र ।

सामासिक शब्द क्या होता है- समास के नियमों से निर्मित शब्द सामासिक शब्द कहलाता है। इसे समस्तपद भी कहा जाता है। समास होने के बाद विभक्तियों के चिह्न गायब हो जाते हैं।

समास के भेद.

1. अव्ययीभाव समास
2. तत्पुरुष समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद्व समास
6. बहुब्रीहि समास

1. अव्ययीभाव समास - इसमें प्रथम पद अव्यय होता है और उसका अर्थ प्रधान होता है उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। इसमें अव्यय पद का प्रारूप लिंगए वचनए कारकए में नहीं बदलता है वो हमें शा एक जैसा रहता है।

दूसरे शब्दों में कहा जाए तो यदि एक शब्द की पुनरावृत्ति हो और दोनों शब्द मिलकर अव्यय की तरह प्रयोग हों वहाँ पर अव्ययीभाव समास होता है संस्कृत में उपसर्ग युक्त पद भी अव्ययीभाव समास ही माने जाते हैं।

जैसे..

यथाशक्ति -शक्ति के अनुसार

यथाक्रम -क्रम के अनुसार

यथानियम - नियम के अनुसार

प्रतिदिन - प्रत्येक दिन

प्रतिवर्ष -हर वर्ष

आजन्म -जन्म से लेकर

यथासाध्य -जितना साधा जा सके

धडाधड- धड.धड की आवाज़ के साथ

घर.घर- प्रत्येक घर

रातों रात - रात ही रात में

आमरण - म्रत्यु तक

यथाकाम - इच्छानुसार

2. तत्पुरुष समास- इस समास में दूसरा पद प्रधान होता है। यह कारक से जुदा समास होता है। इसमें ज्ञातव्य विग्रह में जो कारक प्रकट होता है उसी कारक वाला वो समास होता है। इसे बनाने में दो पदों के बीच कारक चिन्हों का लोप हो जाता है उसे तत्पुरुष समास कहते हैं।
जैसे..

देश के लिए भक्ति देशभक्ति
राजा का पुत्र - राजपुत्र
शर से आहत - शराहत
राह के लिए खर्च - राहखर्च
तुलसी द्वारा कृत - तुलसीदासकृत
राजा का महल - राजमहल

3. कर्मधारय समास - इस समास का उत्तर पद प्रधान होता है। इस समास में विशेषण विशेष्य और उपमेय उपमान से मिलकर बनते हैं उसे कर्मधारय समास कहते हैं।
जैसे-

चरणकमल - कमल के समान चरण
नीलगगन -नीला है जो गगन
चन्द्रमुख - चन्द्र जैसा मुख
पीताम्बर -पीत है जो अम्बर
महात्मा -महान है जो आत्मा
लालमणि - लाल है जो मणि
महादेव - महान है जो देव
देहलता - देह रूपी लता
नवयुवक नव है जो युवक

4- द्विगु समास - द्विगु समास में पूर्वपद संख्यावाचक होता है और कभी- कभी उत्तर पद भी संख्यावाचक होता हुआ देखा जा सकता है। इस समास में प्रयुक्त संख्या किसी समूह को दर्शाती है किसी अर्थ को नहीं । इससे समूह और समाहार का बोध होता है। उसे द्विगु समास कहते हैं।
जैसे..

नवग्रह - नौ ग्रहों का समूह
दोपहर - दो पहरों का समाहार
त्रिवेणी - तीन वेणियों का समूह
पंचतन्त्र - पांच तंत्रों का समूह
त्रिलोक - तीन लोकों का समाहार
शताब्दी - सौ अब्दों का समूह
पंसेरी - पांच सेरों का समूह
सतसई - सात सौ पदों का समूह
चौगुनी - चार गुनी
त्रिभुज - तीन भुजाओं का समाहार

5. द्वंद्व समास - इस समास में दोनों पद ही प्रधान होते हैं इसमें किसी भी पद का गौण नहीं होता है। ये दोनों पद,क.दूसरे पद के विलोम होते हैं लेकिन ये हमें शा नहीं होता है। इसका विग्रह करने पर औरए अथवाए याएएवं का प्रयोग होता है उसे द्वंद्व समास कहते हैं।

जैसे..

जल-वायु - जल और वायु
अपना -पराया - अपना या पराया
पाप-पुण्य - पाप और पुण्य
राधा-कृष्ण - राधा और कृष्ण
अन्न-जल - अन्न और जल
नर-नारी - नर और नारी
गुण-दोष - गुण और दोष
देश-विदेश - देश और विदेश
अमीर-गरीब - अमीर और गरीब

6. बहुब्रीहि समास - इस समास में कोई भी पद प्रधान नहीं होता। जब दो पद मिलकर तीसरा पद बनाते हैं तब वह तीसरा पद प्रधान होता है। इसका विग्रह करने पर "वाला" वह बहुब्रीहि समास कहलाता है।

जैसे-

गजानन- गज का आनन है जिसका अर्थात गणेश
त्रिनेत्र - तीन नेत्र हैं जिसके अर्थात शिव
नीलकंठ - नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
लम्बोदर - लम्बा है उदर जिसका अर्थात गणेश
दशानन - दश हैं आनन जिसके अर्थात रावण
चतुर्भुज - चार भुजाओं वाला अर्थात विष्णु
पीताम्बर - पीले हैं वस्त्र जिसके अर्थात कृष्ण
चक्रधर- चक्र को धारण करने वाला अर्थात विष्णु
वीणापाणी - वीणा है जिसके हाथ में अर्थात सरस्वती
श्वेताम्बर - सफेद वस्त्रों वाली अर्थात सरस्वती

अलंकार

अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है अलम + कार। यहाँ पर अलम का अर्थ होता है आभूषण। मानव समाज बहुत ही सौन्दर्योपासक है उसकी प्रवर्ती के कारण ही अलंकारों को जन्म दिया गया है। जिस तरह सेएकनारी अपनी सुन्दरता को बढ़ाने के लिए आभूषणों को प्रयोग में लाती हैं उसी प्रकार भाषा को सुन्दर बनाने के लिए अलं कारों का प्रयोग किया जाता है। अथार्त जो शब्द काव्य की शोभा को बढ़ाते हैं उसे अलंकार कहते हैं।

अलंकार के भेद-

1. शब्दालंकार
2. अर्थालंकार
3. उभयालंकार

1. शब्दालंकार-

शब्दालंकार दो शब्दों से मिलकर बना होता है शब्द + अलंकार। शब्द के दोरूप होते हैं ध्वनी और अर्थ। ध्वनि के आधार पर शब्दालंकार की सृष्टी होती है। जब अलंकार किसी विशेष शब्द की स्थिति में ही रहे और उस शब्द की जगह पर कोई और पर्यायवाची शब्द के रख देने से उस शब्द का अस्तित्व न रहे उसे शब्दालंकार कहते हैं।

अर्थात जिस अलंकार में शब्दों को प्रयोग करने से चमत्कार हो जाता है और उन शब्दों की जगह पर समानार्थी शब्द को रखने से वो चमत्कार समाप्त हो जाये वहाँ शब्दालंकार होता है।

शब्दालंकार के भेद-

1. अनुप्रास अलंकार
2. यमक अलंकार
3. पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार
4. वक्रोक्ति अलंकार

अनुप्रास अलंकार - अनुप्रास अर्थात अनु+प्र+आस । अनु अर्थात पीछे

जैसे- जन रंजन मंजन दनुज मनुजरूप सुर भूप।

विश्व बदर इव धृत उदर जोवत सोवत सूप।।

यमक अलंकार - यमक शब्द का अर्थ होता है दो। जब एक ही शब्द ज्यादा बार प्रयोग हो पर हर बार अर्थ अलग- अलग आये वहाँ पर यमक अलंकार होता है।

जैसे- कनक कनक ते सौगुनी, मादकता अधिकाय।

पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार - पुनरुक्ति अलंकार दो शब्दों से मिलकर बना है पुनरू +उक्ति। जब कोई शब्द दो बार दोहराया जाता है वहाँ पर पुनरुक्ति अलंकार होता है।

जैसे-

मोहि-मोहि मोहन को मन भयो राधामय।

राधा मन मोहि-मोहि मोहन मयी.मयी।।

वक्रोक्ति अलंकार - जहाँ पर वक्ता के द्वारा बोले गए शब्दों का श्रोता अलग अर्थ निकाले उसे वक्रोक्ति अलंकार कहते है।

जैसे-

को तुम हौ इत आये कहाँ घनस्याम हौ तौ कितहूँ बरसो ।

चितचोर कहावत है हम तौ तहां जाहुं जहाँ धन सरसों।।

वा खाये बौराए नर, वा पाये बौराये।

अर्थालंकार -

जहाँ पर अर्थ के माध्यम से काव्य में चमत्कार होता हो वहाँ अर्थालंकार होता है।

अर्थालंकार के भेद इसके आलावा भी अनेक भेद हैं .

1. उपमा अलंकार
2. रूपक अलंकार
3. उत्प्रेक्षा अलंकार

1. उपमा अलंकार - उपमा शब्द का अर्थ होता है तुलना। जब किसी व्यक्ति या वस्तु की तुलना किसी दूसरे यक्ति या वस्तु से की जाए वहाँ पर उपमा अलंकार होता है।

जैसे-

सागर - सा गंभीर ह्रदय हो,

गिरी - सा ऊँचा हो जिसका मन।

2.रूपक अलंकार -

जहाँ पर उपमेय और उपमान में कोई अंतर न दिखाई दे वहाँरूपक अलंकार होता है अथार्त जहाँ पर उपमेय और उपमान के बीच के भेद को समाप्त करके उसेएककर दिया जाता है वहाँ पररूपक अलंकार होता है।

जैसे-

उदित उदय गिरी मंच परए रघुवर बाल पतंग।

विगसे संत सरोज सब हरषे लोचन भ्रंग।।

उत्प्रेक्षा अलंकार - जहाँ पर उपमान के न होने पर उपमेय को ही उपमान मान लिया जाए। अथा र्त जहाँ पर अप्रस्तुत को प्रस्तुत मान लिया जाए वहाँ पर उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

जैसे-

सखि सोहत गोपाल केए उर गुंजन की माल

बाहर सोहत मनु पियेए दावानल की ज्वाल।।

उपसर्ग

उपसर्ग दो शब्दों से मिलकर बना होता है उपसर्ग। उप का अर्थ होता है समीप और सर्ग का अर्थ होता है सृदृष्टि करना। संस्कृत एवं संस्कृत से उत्पन्न भाषाओँ में उस अव्यय या शब्द को उपसर्ग कहते है। अर्थात शब्दांश उसके आरम्भ में लगकर उसके अर्थ को बदल देते हैं या फिर उसमें विशेषता लाते हैं उन शब्दों को उपसर्ग कहते हैं। शब्दांश होने के कारण इनका कोई स्व तंत्ररूप से कोई महत्व नहीं माना जाता है।

उदाहरण.. हार एक शब्द है जिसका अर्थ होता है पराजय। लेकिन इसके आगे आ शब्द लगने से नया शब्द बनेगा जैसे आहार जिसका मतलब होता है भोजन।

उपसर्ग के भेद..

1. संस्कृत के उपसर्ग
2. हिंदी के उपसर्ग
3. अरबी.फारसी के उपसर्ग
4. अंग्रेजी के उपसर्ग
5. उर्दू के उपसर्ग
6. उपसर्ग की भांति प्रयुक्त होने वाले संस्कृत के अव्यय

1. संस्कृत के उपसर्ग..

1.अति अधिक,परे, ऊपर, उस पार,.

अत्यधिक, अतिशय, अत्यंत, अतिरिक्त, अत्यल्प, अतिक्रमण, अतिवृदृष्टि , अतिशीघ्र, अत्याचार, अतीन्द्रिय, अत्युक्ति, अत्युत्तम, अत्यावश्यक, अतीव, अतिकाल, अतिरेक आदि।

2. अप बुरा, अभाव, विपरीत, हीनता, छोटा .

अपयश, अपमान, अपशब्द, अपराध, अपकार, अपकीर्ति, अपभ्रश, अपव्यय, अपवाद, अपकर्ष, अपहरण, अपप्रयोग, अपशकुन, अपेक्षा आदि।

3. अ अभाव, अन, निषेध, नहीं, विपरीत .

अधर, अपलक, अटल, अमर, अचल, अनाथ, अविश्वास, अधर्मए अचेतन , अज्ञान, अलग, अनजान, अनमोल, अनेक, अनिष्ट, अथाह, अनाचार, अलौकिक, अस्वीकार, अन्याय, अशोक, अहिंसा, अवगुण, अर्जित आदि।

4. अनु पीछे, समान, क्रम, पश्चात .

अनुक्रमांक, अनुकंपा, अनुज, अनुरूप, अनुपात, अनुचर, अनुकरण, अनुसार, अनुशासन, अनुराग, अनुग्रह, अनुवाद, अनुस्वार, अनुशीलन, अनुकूल, अनुक्रम, अनुभव, अनुशंसा, अन्वय, अन्वीक्षण, अन्वेषण, अनुच्छेद, अनूदित आदि।

5. आ ओर, सीमा, तक, से, समेत, कमी, विपरीत, उल्टा, अभाव, नहीं .

आगमन, आजीवन, आमरण, आचरण,आलेख, आहार, आकर्षण, आकर, आकार, आभार, आशंका, आवेश, आरक्त, आदान, आक्रमण, आकलन, आकाश, आरम्भ, आमुख, आरोहण, आजन्म, आयात, आतप, आगार, आगम, आमोद, आरक्षण, आकर्षण, आबालवृ., आघात आदि।

6. अधि श्रेष्ठ, प्रधान, ऊपर, सामीप्य .

अधिकार, अधिसूचना, अधिपति, अधिकरण, अधिनायक, अधिमान, अधिपाठक, अधिग्रहण, अधिवक्ता, आधिक्य, अध्धयन, अध्यापन, अधिराज, अध्यात्म, अध्यक्ष, अधिनियम, अधिमास, अधिकृत, अधिक्षण, अध्यादेश, अधीन, अधीक्षक आदि।

7.अभि सामने, पास, ओर, इच्छा प्रकट करना, चारों ओर .

अभ्यास, अभ्युदय, अभिमान, अभिषेक,अभिनय, अभिनव, अभिवादन, अभिभाषण, अभियोग, अभिभूत, अभिभावक, अभ्यर्थी, अभीष्ट, अभ्यंतर, अभीप्सा, अभिनन्दन, अभिलाप, अभीमुख, अभ्युत्थान,अभियान, अभिसार, अभ्यागत, अभ्यास, अभिशाप,अभिज्ञान आदि।

8. उप निकट, छोटा, सहायक, सद्रश, गौण, हीनता .

उपकार, उपग्रह, उपमंत्री, उपहार, उपदेश, उपवन, उपनाम, उपचार, उपसर्ग, उपयोग, उपभोग, उपभेद, उपयुक्त, उपेक्षा, उपाधि, उपाध्यक्ष,उपकूल, उपनिवेश, उपस्थिति, उपासना, उपदिशा, उपवेद, उपनेत्र, उपरांत, उपसंहार, उपकरण, उपकार आदि।

9. प्र आगे, अधिक, ऊपर, यश .

प्रमाण, प्रयोग, प्रताप, प्रबल, प्रस्थान, प्रकृति, प्रमुख,प्रदान, प्रचार, प्रसार, प्रहार, प्रयत्न, प्रभंजन, प्रपौत्र, प्रारम्भ, प्रोज्जवल, प्रेत, प्राचार्य, प्रयोजक, प्रार्थी, प्रक्रिया, प्रवाह, प्रख्यात, प्रकाश, प्रकट, प्रगति, प्रपंच, प्रलाप, प्रभुता, प्रपिता, प्रकोप, प्रभु, प्रयास आदि।

2. हिंदी के उपसर्ग..

1. अन अभाव, निषेध, नहीं .

अनजान, अनकहा, अनदेखा, अनमोल, अनबन, अनपढ़, अनहोनी, अछूत, अचेत, अनचाहा, अनसुना, अलग, अनदेखी आदि।

2. अध् आधा .

अधपका, अधमरा, अधक्च्चा, अधकचरा, अधजला, अधखिला, अधगला, अधनंगा आदि।

3. उन एककम .

उनतीस, उनचास, उनसठ, उनहत्तर, उनतालीस, उन्नीस, उन्नासी आदि।

4. दु बुरा, हीन, दो, विशेष, कम .

दुबला, दुर्जन, दुर्बल, दुलारा, दुधारू, दुसाध्य, दुरंगा, दुलत्ती, दुनाली, दुराहा, दुपहरी, दुगुना, दुकाल आदि।

5. नि रहित, अभाव, विशेष, कमी .

निडर, निक्कमा, निगोड़ा, निहत्था, निहाल आदि।

6. अ . अभाव, निषेध .

अछुता, अथाह, अटल, अचेत आदि।

7. कु बुरा, हिन् .

कुचाल, कुचैला, कुचक्र, कपूत, कुढंग, कुसंगति, कुकर्म, कुरूप, कुपुत्र, कुमार्ग, कुरीति, कुख्यात, कुमति आदि।

8. औ हीन, अब, निषेध .

औगुन, औघर, औसर,औसान, औघट, औतार, औगढ़, औढर आदि।

9. भर पूरा, ठीक .

भरपेट, भरपूर, भरसक, भरमार, भरकम, भरपाई, भरदिन आदि।

10. सु सुंदर, अच्छा .

सुडौल, सुजान, सुघड़, सुफल, सुनामी, सुकाल, सपूत आदि।

4. अंग्रेजी के उपसर्ग..

1. हाफ आधा .

हाफ पेंट, हाफ बाड़ी, हाफटिकट, हाफरेट, हाफकमीज आदि।

2. सब अधीन, नीचे .

सब पोस्टर, सब इंस्पेक्टर, सबजज, सबकमेटी, सबरजिस्टर आदि।

3. चीफ प्रमुख .

चीफ मिनिस्टर, चीफ इंजीनियर, चीफ सेक्रेटरी आदि।

4. जनरल प्रधान, सामान्य .

जनरल मैनेजर, जनरल सेक्रेटरी, जनरल इंश्योरेंस आदि।

5. हैड मुख्य .

हैड मुंशी, हैड पंडित, हेडमास्टर, हेड क्लर्क, हेड ऑफिस, हेड कांस्टेबल आदि।

6. डिप्टी सहायक .

डिप्टी कलेक्टर, डिप्टी रजिस्टर, डिप्टी मिनिस्टर आदि।

7. वाइस सहायक, उप .

वाइसराय, वाइस चांसलर, वाइस प्रेजिडेंट, वाइस प्रिंसिपल आदि।

8.,क्स मुक्त .

एक्सप्रेस,,क्स कमिश्नर,,क्स स्टूडेंट,,क्स प्रिंसिपल आदि।

5. उर्दू के उपसर्ग..

1. अल निश्चित .

अलगरज, अलबत्ता आदि।

2. कम थोडा, हीन .

कमजोर, कमउम्र, कमबख्त, कमसिन, कमख्याल, कमदिमाग, कमजात आदि।

3. खुश अच्छा .

खुशनसीब, खुशहाल, खुशकिस्मत, खुशदिल, खुशनुमा, खुशगवार, खुशमिजाज, खुसबू आदि।

4. गैर निषेध, के बिना .

गैरहाजिर, गैरकानूनी, गैरसरकारी, गैरजरूरी, गैरकौम, गैरहाजिब, गैरमुनासिब आदि।

5. दर में .

दरकार, दरबार, दरमियान, दरअसल, दरहकीकत आदि।

6. ना अभाव, निषेध .

नालायक, नासमझ, नाबालिक, नाराज, नामुमकिन, नादान, नापसंद, नामुराद, नाकामयाब, नाचीज, नापाक, नाकाम आदि।

7. बद बुरा .

बदतर, बदनाम, बदकिस्मत, बदसूरत, बदमाश, बददिमाग, बदचलन, बदहजमी, बदमजा, बददुआ, बदनीयत, बदकार आदि।

8. बर बाहर, ऊपर .

बरखास्त, बरदास्त, बरबाद, बरवक्त, बरकरार, बरअक्स, बरजमा आदि।

9. बे बिना .

बेवक्त, बेझिझक, बेवकूफ, बेइज्जत, बेकाम, बेअसर, बेरहम, बेईमान, बेचारा, बेअक्ल, बेबुनियाद, बेतरह, बेमानी, बेशक आदि।

10. ला बिना, रहित .

लाजवाब, लापता, लाचार, लावारिस, लापरवाह, लाइलाज, लामानी, लाइल्म आदि।

11. हर प्रत्येक, प्रति .

हरदम, हरवक्त, हरपल, हरदिन, हरसाल, हरएक, हरबार आदि।

12. हम समान, बराबर .

हमसफर, हमदर्द, हमशक्ल, हमउम्र, हमदर्दी, हमपेशा, हमराज, हमदम आदि।

प्रत्यय

प्रत्यय की परिभाषा भेद और उदाहरण

प्रत्यय दो शब्दों से मिलकर बना होता है प्रति +अय। प्रति का अर्थ होता है साथ में,पर बाद में और अय का अर्थ होता है चलने वाला ।अतरू प्रत्यय का अर्थ होता है साथ में पर बाद में चलने वाला। जिन शब्दों का स्वतंत्र अस्तित्व नहीं होता वे किसी शब्द के पीछे लगकर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।

प्रत्यय का अपना अर्थ नहीं होता और न ही इनका कोई स्वतंत्र अस्तित्व होता है। प्रत्यय अविकारी शब्दांश होते हैं जो शब्दों के बाद में जोड़े जाते है। कभी कभी प्रत्यय लगाने से अर्थ में कोई बदलाव नहीं होता है। प्रत्यय लगने पर शब्द में संधि नहीं होती बल्कि अंतिम वर्ण में मिलने वाले प्रत्यय में स्वर की मात्रा लग जाएगी लेकिन व्यंजन होने पर वह यथावत रहता है।

जैसे..

समाज + इक - सामाजिक

सुगंध +इत - सुगंधित

भूलना +अक्कड - भुलक्कड

मीठा +आस - मिठास

लोहा +आर - लुहार

नाटक +कार -नाटककार

बड़ा +आई - बडाई

टिक +आऊ - टिकाऊ
बिक +आऊ - बिकाऊ
होन +हार - होनहार
लेन +दार - लेनदार
घट + इया - घटिया
गाडी +वाला - गाड़ीवाला
सुत +अक्कड - सुतक्कड़
दया +लु - दयालु

मुहावरे और लोकोक्तियाँ

मुहावरे
कोई भी ऐसा वाक्यांश जो अपने साधारण अर्थ को छोड़कर किसी विशेष अर्थ को व्यक्त करे उसे मुहावरा कहते हैं।
लोकोक्ति
लोक अनुभव से बनने वाली उक्तियाँ जो किसी समाज ने लंबे अनु भव से सीखा है उसे एकवाक्य में बाँध दिया है ।
मुहावरे
अंग अंग खिल उठना- प्रसन्न हो जाना।
अंग छूना- कसम खाना।
अंग अंग टूटना- सारे बदन में दर्द होना।
अंग अंग ढीला होना- बहुत थक जाना।
अंग अंग मुसकाना- बहुत प्रसन्न होना।
अपनी नींद सोना- इच्छानुसार कार्य करना।
अपना हाथ जगन्नाथ- स्वाधिकार होना।
अरण्य रोदन- निष्फल निवेदन।
अवसर चूकना- सुयोग का लाभ न उठाना।
अवसर ताकना- मौका ढूँढना।
आँख का तारा- बहुत प्यारा होनाध्अति प्रिय।
आँख उठाना- क्रोध से देखना।
आँख बन्द कर काम करना- ध्यान न देना।
आँख चुराना - छिपना।
आँख मारना - इशारा करना।
आँख तरसना - देखने के लालायित होना।
आँख फेर लेना - प्रतिकूल होना।
आँख बिछाना - प्रतीक्षा करना।
आँखें सेंकना - सुंदर वस्तु को देखते रहना।
आँख उठाना- देखने का साहस करना।
आँख खुलना - होश आना।

आँख लगना - नींद आना अथवा प्यार होना।
आँखों पर परदा पड़ना - लोभ के कारण सच्चाई न दीखना।
आँखों में समाना - दिल में बस जाना।
आँखे चुराना - अनदेखा करना।
आँखें चार होना - आमने सामने होनाध्प्रेम होना।
आँखों पर बिठाना -आदर करना।
आँखों में धूल झोंकना- धोखा देना।
आँखों का पानी ढलना- निर्लज्ज बन जाना।
आँखों से गिरना-आदर समाप्त होना।
आँखों पर परदा पड़ना --बुद्धि भ्रष्ट होना।
आँखों में रात कटना -रात भर जागते रहना।
आँच न आने देना- थोड़ी भी हानि न होने देना।
आँसू पीकर रह जाना -भीतर ही भीतर दुःखी होना।
आकाश के तारे तोड़ना-असम्भव कार्य करना।
आकाश पातालएककरना -कठिन प्रयत्न करना।
आग में घी डालना -क्रोध और अधिक बढ़ाना।
आग से खेलना -- जानबूझकर मुसीबत में फँसना।
आग पर पानी डालना -उत्तेजित व्यक्ति को शान्त करना।
आटे दाल का भाव मालूम होना - कठिनाई में पड़ जाना।
आसमान से बातें करना- ऊँची कल्पना करना।
आग पानी का बैर -स्वाभाविक शत्रुता।
आसमान पर चढ़ना -बहुत अधिक अभिमान करना।
आग बबूला होना -बहुत क्रोध करना।
आपे से बाहर होना -अत्यधिक क्रोध से काबू में न रहना।
कुछ प्रचलित लोकोक्तियाँ
अंडा सिखावे बच्चे को चीं-चीं मत कर- छोटे के द्वारा बड़े को उपदेश देना।
अंडे सेवे कोई बच्चे लेवे कोई - परिश्रम कोई करे लाभ किसी और को मिले।
अंडे होंगे तो बच्चे बहुतेरे हो जाएँगे - मूल वस्तु रहने पर उससे बनने वाली वस्तुएँ मिल ही जाती हैं।
अंत भला सो सब भला - कार्य का परिणाम सही हो जाए तो सारी गलतियाँ भुला दी जाती हैं।
अंत भले का भला - भलाई करने वाले का भला ही होता है।
अंधा बाँटे रेवड़ी फिर- फिर अपनों को देय -अपने अधिकार का लाभ अपने लोगों को ही पहुँचाना।
अंधा क्या चाहे दो आँखें - मनचाही वस्तु प्राप्त होना।
अक्ल बड़ी या भैंस -शारीरिक शक्ति की अपेक्षा बुद्धि का अधिक महत्व होता है।
अच्छी मति जो चाहोंए बूढ़े पूछन जाओ - बड़े-बूढ़ों के अनुभव का लाभ उठाना चाहिये।
अटकेगा सो भटकेगा -दुविधा या सोच.विचार में पड़ने से काम नहीं होता।
अधजल गगरी छलकत जाए -ओछा आदमी थोड़ा गुण या धन होने पर इतराने लगता है।

संधि

संधि शब्द का अर्थ है मेल। दो निकटवर्ती वर्णों के आपसी मेल से जो परिवर्तन होता है उसे संधि कहलाता है।

संधि तीन प्रकार में विभाजित है

1.स्वर संधि

2 व्यंजन संधि

3 विसर्ग संधि

स्वर संधि

दो स्वरों के आस .पास आने पर उनमें जो परिवर्तन होता है, उसे स्वर संधि कहते है।

जैसे विद्या + आलय त्र विद्यालय।

व्यंजन संधि

व्यंजन के साथ स्वर अथवा व्यंजन के मेल से उस व्यंजन में जो रुपान्तरण होता है , उसे व्यंजन संधि कहते हैं

विसर्ग संधि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन का मेल होने पर जो विकार होता है, उसे विसर्ग संधि कहते हैं !

औपचारिक पत्र और अनौपचारिक पत्र

हिंदी में पत्र लेखन यह ध्यान रखें-

हिंदी में पत्र लेखन अंग्रेजी भाषा की तरह ही होता है। पत्र लिखते समय आप को यह ध्यान रखना है की जो पत्र आप लिख रहे हैं पढ़ने वाले को कितना समझ में आएगा ! क्योंकि जब कोई पत्र पढ़ता है तो आप वहां पर नहीं होते हैं तो आपका पत्र लेखन ऐसा हो कि आप उ सके सामने नहीं होते हुए भी उसको अनुभव दिलाते हैं कि मैं आपके पास हूं और आपसे वार्तालाप कर रहा हूं !

सरल भाषा का उपयोग हमेंशा अच्छा माना जाता है ! लेकिन जटिल शब्दों का प्रयोग व उलझे हुए वाक्य पाठक को निरर्थक एवं उबाऊ बना देते हैं ! निश्चयात्मकताए आपके पत्र में होनी चाहिए यदि पाठक को पत्र पढ़ने के बाद कोई शंका या दुविधा बनी रहती है तो पत्र लिखने का सारा उद्देश्य ही खत्म हो जाता है ! संक्षिप्तता से अपनी पूरी बात लिखना ही अच्छा पत्र लेखन माना जाता है ! पत्र लेखन को दो वर्गो में विभाजित किया जाता है .

औपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र

औपचारिक पत्र

औपचारिक पत्रए हिंदी में पत्र लेखन में ध्यान रखें की जिसको आप पत्र लिख रहे हैं उनसे आपका कोई निजी परिचय नहीं है यदि आपका व्यक्तिगत लगाव या परिचय भी हो तो लेखन में वह व्यक्त नहीं होना चाहिए ! औपचारिक पत्र लेखन में मुख्यतः सं देशए सूचनाएवं तथ्यों का ही अधिक महत्व दिया जाता है ! इस प्रकार के पत्र संस्था के अधिकारीएवं कार्यालय के अधिकारी को लिखा जाता है !

अनौपचारिक पत्र

अनौपचारिक पत्र हिंदी में पत्र लेखन में ध्यान रखें कि जिसको आप पत्र लिख रहे हैं उनसे आपका निजी परिचय है और उनसे व्यक्तिगत संबंध भी हैं! इस तरह के पत्र लेखन में व्यक्तिगत सुख-दुख का ब्योराएवं विवरण के साथ व्यक्तिगत संबंध को उल्लेख किया जाता है ! अपने परिवार के लोग मित्रएवं निकट संबंधियों को इस तरह के पत्र लिखे जाते हैं !

पत्र लेखन नमूना

औपचारिक पत्र . पत्र लेखन नमूना

हिन्दी सरकारी पत्र लेखन में निवास प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्रए आय प्रमाण पत्र हेतु आवेदन पत्रए जन्म प्रमाण पत्र ऑनलाइन आवेदनए और शासकीय पत्र लेखन आदि शामिल है ! अक्सर लोगों का यह प्रश्न होता है कि आवेदन पत्र कैसे लिखे !

पत्र लेखन प्रारूप . ध्यान देना अति आवश्यक है जो आपके पत्र लेखन को आसान बना देता है वह कैसे आप को उदाहरण देकर मैं समझाता हूं !

औपचारिक पत्र लेखन में

शीर्ष भाग में पत्र प्रेषक का पता बाईं ओर लिखा जाता है तथा पत्र प्रेषक अपने नाम के नीचे स्वनिर्देशि के बाद लिखते हैं !

मध्य भाग में संदेश का विवरण होता है !

अंतिम भाग आभार सूचक वाक्य जैसे धन्यवाद आदि का प्रयोग किया जाता है

अनौपचारिक पत्र . पत्र लेखन नमूना

पत्र लेखन प्रारूप . ध्यान देना अति आवश्यक है जो आपके पत्र लेखन को आसान बना देता है वह कैसे आप को उदाहरण देकर मैं समझाता हूं !

अनौपचारिक पत्र लेखन में

- शीर्ष भाग में पता एवं दिनांक, संबोधन और प्रशस्ति आते हैं !
- मध्य भाग में संदेश व कथा का विवरण होता है !
- अंतिम भाग आभार सूचक वाक्य जैसे आप काए प्रणामए धन्यवाद आदि का प्रयोग किया जाता है !

अनौपचारिक पत्र

पिताजी को पत्र .

स्थान का नाम

तिथि

पूजनीय पिताजी

सादर प्रणाम!

कल ही संध्याकालीन भारतीय डाक से आपका पत्र मिला ! आप सभी का कुशल .क्षेम जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई ! यहां पर गौरवएवं मीनाक्षी ठीक हैं !

आपने अपने पत्र में परीक्षा की तैयारी के विषय में पूछा था आपको बता दूं कि हमारी तैयारी पूरी हो चुकी है जो भी बचा है मैं समय रहते पूरा कर लूंगा ! हमें कुछ और पुस्तक खरीदने की आवश्यकता है जो हमारी प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए उत्तम सि. हो सकता है !

मैं आपसे अनुरोध करता हूँ कि हमें 1000/- रु. भेज दीजिए ।मैं उससे पुस्तक खरीद लूँगा।

शेष सब कुशल है ! माता जी और बुआ जी को मैं और मेरे मित्र उनको प्रणाम कहते हैं !

आपका आज्ञाकारी पुत्र

नाम

औपचारिक पत्र

सेवामें

सम्पादक महोदय

दैनिक जागरण

मॉल रोड कानपुर।

विषय. सम्पादक को बिजली संकट के लिए पत्र

महोदय,

मै आपके लोकप्रिय समाचार पत्र दैनिक जागरण के माध्यम से अ पने नगर में बिजली संकट से उत्पन्न कठिनाइओं की और अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूँ।

मै मॉल रोड कानपुर क्षेत्र वाला नागरिक हूँ। आजकल होने वाले बिजली संकट ने यहाँ के निवासियों को परेशान कर रखा है। इससे पहले कभी ऐसे नहीं हुआ था , इस संकट का सामना सबसे अधिक आम लोगों को और छात्रों को करना पड़ रहा है। शाम होते ही सब .कुछ अँधेरे की छाया में सिमट जाता है। पढ़ने वाले छात्र कुछ भी पढ़ पाने में असमर्थ हो जाते है। बिजली के अभाव में 3 .3 दिन तक आता पीस नहीं पाता है। पीने का पानी भरना भी बहुत बड़ी भी समस्या हो गयी है। बिजली के अभाव में पानी को मोटर द्वारा ऊपर की मंजिलों तक नहीं पहुँचाया जा पा रहा है चौकाने वाली बात तह है की क्षेत्र में रहने वाले उद्योगपतियों और अधिकारियों के घर की बिजलीएकमिनट के लिए भी नहीं जाती है।

मैं इस पत्र द्वारा आपके माध्यम से इन भ्रष्ट अधिकारियों की पोल खोलना चाहता हूँ। इस कार्य में आप के सहयोग के लिए मैं आपका आभारी रहूँगा।

धन्यवाद

निशिकांत

मॉल रोड कानपुर

अनुच्छेद लेखन

अनुच्छेद लेखन के लिए ध्यान रखने योग्य कुछ बातें

1. यह एक ही अनुच्छेद पैराग्राफ में लिखा जाता है।
2. यह मुख्य विषय को आधार बना कर लिखा जाता है।
3. शब्दों का प्रयोग इस प्रकार हो की बड़े से बड़े वाक्य मेंएकशब्दएकबार ही उपयोग हो।
4. विषय वर्णन इस प्रकार हो कि वो आकर्षक लगेए अशुद्धि रहित हो और वाक्य क्रम में हों।
5. अनुच्छेद अक्सर 90.120 शब्दों में लिखा जाता है।
6. निबंध विस्तार में होता है जबकि अनुच्छेद लेखन का मतलब विस्तार को संक्षेप में लिखना होता है।

अनुच्छेद उदाहरण

कंप्यूटर युग

आज के युग को विज्ञान का युग कहा जाता है। किसी देश का विकास उसके वैज्ञानिक , औद्योगिक व तकीनीकी प्रगति पर निर्भर करता है। आज कंप्यूटर बैंक , रेलवेस्टेशन, हवाई अड्डे, डाकखाने, कारखाने, व्यवसाय हर क्षेत्र में दिन .प्रतिदिन के कार्यों में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है।

कंप्यूटर के अविष्कार ने जीवन को सरलए सुगम और सुविधाजनक बना दिया है। बिल भरनाए रेलवे या हवाई जहाज के टिकट करवानाए परीक्षा परिणाम देखनाए अपने हाल.चलएकव्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को देना आदि अनेक कार्य है जो की कंप्यूटर के मदद से बहुत ही आसान हो गए हैं। कंप्यूटर ने चिकित्सा के क्षेत्र में भी अपना बहुत बड़ा योगदान दिया है। जैसे की इसके बहुत सारे फायदे हैं वैसे ही इसके बहुत सारे दुष्प्रभाव भी हैं। इसका दुष्प्रभाव उसके संबंधों के सीमित होनेए साधन को साध्य माननेए स्वास्थ और सामाजिक जीवन में कमी आने केरूप में देखने को मिल रहा है। मनुष्य को समझना चाहिए की वह इसका दास नहीं है । इसे सिर्फएकसाधन माने और इसका उचित उपयोग तभी करे जब ज़रुरत हो तभी उसका जीवन सफल होगा और वह विकास की तरफ अग्रसर होगा।

निबंध

निबंध शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है नि+ बंध

इसका अर्थ है भली प्रकार से बंधी हुई रचना।

एक अच्छा निबंध लिखने के लिए कुछ आवश्यक बातें ।

1. निबंध लेखन के पूर्व विषय पर विचार कर

अ. निबंध को शीर्षकों पॉइंट्सम्रमें बांट लेना चाहिए।

ब. इन शीर्षकों को उपशीर्षकों में बांट लेना चाहिए।

स. अधिक नहीं तो आरंभए मध्य उपसंहार पर्याप्त है।

2 भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए ।

3 विचारों को क्रमबद्ध रूप से नियोजित किया गया हो।

4. विचारों की पुनरावृत्ति से बचना चाहिए।

भारत में महिला शिक्षा

प्रस्तावना.

भारतीय समाज के सही आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नारी शिक्षा बेहद ज़रूरी है। महिला एवं पुरुष दोनों ही एक सिक्के के दो पहलू हैं। जिस तरह से साइकिल का संतुलन दोनों पहियों पर निर्भर होता है उसी तरीके से समाज का विकास भी पुरुष और महिला के कन्धों पर आश्रित है। दोनों ही देश को नई ऊँचाईयों तक ले जाने की क्षमता रखते हैं इसलिए दोनों को ही बराबर की शिक्षा का हक़ मिलना जरुरी है। अगर इन दोनों में से किसी भीएककी शिक्षा का स्तर गिरा तो समाज की प्रगति होना नामुमकिन है।

भारत में महिला सुरक्षा के लाभ

भारत की उन्नति के लिए महिलाओं का शिक्षित होना बहुत जरुरी है क्योंकि अपने बच्चों की पहली शिक्षक माँ ही होती है जो उन्हें जीवन की अच्छाईयों और बुराइयों से अवगत कराती है। अगर नारी शिक्षा को नजरंदाज़ किया गया तो देश के भविष्य के लिए यह किसी खतरे से कम नहीं होगा।एकअनपढ़ महिला में वो काबिलियत नहीं होती जिससे वह अपने परिवारए बच्चों का सही ख्याल रख सके। इस कारण आने वाली पीढ़ी कमज़ोर हो जाएगी। हम महिला साक्षरता के सारे लाभ की गिनती तो नहीं कर सकते पर इतना जरुर कह सकते है कीएकशिक्षित महिला अपने परिवार और बच्चों की जिम्मेदारी को अच्छे से निभा सकती है । उन्हें अच्छे बुरे का ज्ञान दे सकती है । सामाजिक तथा आर्थिक कार्य करके देश की प्रगति में अपना योगदान दे सकती है।

एक पुरुष को शिक्षित करके हम सिर्फएकही व्यक्ति तक शिक्षा पहुँचा पाएंगे परएकमहिला को शिक्षित करके हम पूरे देश तक शिक्षा को पहुँचा पाएंगे। महिला साक्षरता की कमी देश को कमज़ोर बनाती है। इसलिए यह बहुत जरुरी है कि महिलाओं को उनकी शिक्षा का हक़ दिया जाए और उन्हें किसी भी तरह से पुरुषों से कम न समझा जाए।

निष्कर्ष

आज के समय में भारत महिला साक्षरता के मामले में लगाता र प्रगति कर रहा है। हिंदुस्तान के इतिहास में भी बहादुर महिलाओं जिक्र किया गया है। मीराबाई दुर्गावती अहिल्याबाई लक्ष्मीबाई जैसी कुछ मशहूर महिलाओं के साथ.साथ वेदों के समय की महिला दर्शनशास्त्री गार्गी विस्वबरा मैत्रयी आदि का भी उदाहरण इतिहास का पन्नो में दर्ज है। ये सब महिलाएं प्रेरणा का स्रोत थी। समाज और देश के लिए दिए गए उनके योगदान को हम कभी नहीं भूल सकते।